



## रिपोर्ट

### ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट्स (AICRPs) और नेशनल प्रोग्राम ऑन फॉरेस्ट जेनेटिक रिसोर्सेज पर राष्ट्रीय आउटरीच कार्यशाला 5<sup>th</sup> and 6<sup>th</sup> अगस्त, 2025

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (ICFRE) के अंतर्गत देहरादून स्थित आईसीएफ़आरआई-वन अनुसंधान संस्थान (ICFRE-FRI) ने 5 और 6 अगस्त, 2025 को “ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट्स (AICRP) एवं राष्ट्रीय वन आनुवंशिक संसाधन कार्यक्रम” पर एक राष्ट्रीय जनसंपर्क कार्यशाला का आयोजन किया।

**प्रथम दिवस : 5 अगस्त, 2025**

#### उद्घाटन सत्र

कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएफ़आरआई-एफ़आरआई की निदेशक, डॉ. रेनू सिंह, भा. व. से. द्वारा स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने मुख्य अतिथि डॉ. समीर सिन्हा, भा. व. से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख (PCCF & HoFF), उत्तराखंड तथा डॉ. राजेश शर्मा, उप महानिदेशक (अनुसंधान), आईसीएफ़आरआई का स्वागत किया, साथ ही कार्यशाला में ऑफ़लाइन एवं ऑनलाइन मोड से शामिल सभी प्रतिभागियों का भी अभिनंदन किया। इस अवसर पर विभिन्न राज्य वन विभागों के अधिकारी, विभिन्न शोध एवं शैक्षणिक संस्थानों के वरिष्ठ संकाय सदस्य, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् तथा तकनीकी विशेषज्ञों, कृषकों, समुदाय के सदस्यों एवं उद्योग प्रतिनिधियों सहित विभिन्न हितधारकों ने भाग लिया।

डॉ. रेनू सिंह ने बताया कि “ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट्स” (AICRPs) और “वन आनुवंशिक संसाधन कार्यक्रम” में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, जिनमें से पाँच परियोजनाएँ एफ़आरआई द्वारा सफलतापूर्वक कार्यान्वित की गई हैं। आईसीएफ़आरआई-एफ़आरआई ने 15 राज्यों में पाँच प्रमुख जलवायु क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हुए अग्नि-प्रवण क्षेत्रों तथा मृदा पोषक तत्व गतिशीलता पर आधारभूत आंकड़े एकत्र किए हैं। आईआईटी रुड़की एवं डीआरडीओ के साथ सहयोग से वन अग्नि की रोकथाम हेतु उपकरण, गियर तथा सात क्षेत्रीय भाषाओं

में प्रसार सामग्री विकसित की गई है, साथ ही एक लघु मीडिया फ़िल्म एवं पॉडकास्ट भी तैयार किए गए हैं, जिनके माध्यम से वन अग्नि जागरूकता एवं प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं।

बीज स्वास्थ्य एवं गुणवत्ता सुधार में किए गए प्रयासों पर विशेष जोर दिया गया, जिनमें 15 राज्यों, 7 वन प्रकारों और 78 प्रजातियों के लिए बीज परीक्षण, भंडारण और प्रबंधन से संबंधित प्रोटोकॉल शामिल हैं। शुष्क, अर्द्ध-शुष्क, हिमालयी, उष्णकटिबंधीय और वर्षावन क्षेत्रों में पारिस्थितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए बीज संग्रह एवं संरक्षण रणनीतियाँ विकसित की गई हैं, ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सके। इन पहलों का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों के बीच तालमेल बढ़ाना और आनुवंशिक संसाधनों के सामुदायिक आधारित संरक्षण को प्रोत्साहित करना है।

उन्होंने वानिकी संसाधनों के जैव-संधान, अल्प-परिचित लकड़ी प्रजातियों (LKTS), नवाचार, संवर्द्धन, क्षमता निर्माण एवं जैव-संसाधनों के सतत उपयोग पर भी बल दिया। जर्मप्लाज्म संसाधनों का संरक्षण, जलवायु सहनशीलता, पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता तथा आजीविका सृजन को प्रमुख विषयों के रूप में रेखांकित किया गया।

डॉ. राजेश शर्मा ने कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसके उद्देश्यों एवं अपेक्षित परिणामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वर्ष 2020 में प्रारंभ की गई CAMPA-प्रायोजित योजना पर चर्चा की, जिसमें सभी आईसीएफ़आरई संस्थानों तथा 70 गैर-आईसीएफ़आरई संस्थानों को शामिल किया गया है। उन्होंने 13 प्रजाति-विशिष्ट एवं 18 विषय-आधारित अध्ययनों के प्रमुख निष्कर्ष साझा करते हुए वानिकी बीज, वन आनुवंशिक संसाधन (FGRs) तथा वन अग्नि प्रबंधन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि पाई गई जानकारीयाँ एवं अंतराल (gaps) हितधारकों के साथ साझा किए जाने चाहिए और इन्हें भविष्य के आईसीएफ़आरई अनुसंधानों की आधारशिला के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

AICRPs एवं NFRG कार्यक्रमों के अंतर्गत विकसित विभिन्न प्रसार सामग्रियों का विमोचन इस आयोजन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा।

उद्घाटन भाषण उत्तराखंड के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख (PCCF & HoFF) डॉ. समीर सिन्हा द्वारा दिया गया, जिन्होंने नीतिगत समेकन एवं जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन रणनीतियों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टियाँ साझा कीं। उन्होंने वानिकी-आधारित अनुसंधान की सहयोगात्मक एवं समग्र प्रकृति को रेखांकित किया, जिसमें वनाग्नि, बीज प्रणाली, मृदा स्वास्थ्य, जैव-संधान तथा आनुवंशिक संसाधन जैसे विषय शामिल हैं। वनाग्नि को “अच्छा सेवक लेकिन बुरा स्वामी” बताते हुए उन्होंने वनाग्नि एवं मानव-वन्यजीव संघर्ष से निपटने के लिए प्रशासनिक, कानूनी एवं तकनीकी हस्तक्षेपों को सुदृढ़ करने का आह्वान किया। उन्होंने पारंपरिक औज़ार

जैसे 'झापा' को आधुनिक, उन्नत तकनीकों एवं सुरक्षा उपकरणों के साथ पुनः विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

'हरेला' के अवसर पर, वन अनुसंधान संस्थान की शोध टीम के प्रयासों से उत्तराखंड में पहली बार वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किए गए। उन्होंने इन वन मृदा कार्डों को रेंज स्तर तक विकसित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने स्थानीय कहावत "कोस-कोस पे पानी बदले, चार कोस पे वाणी" का उल्लेख करते हुए भारत के वनों की पारिस्थितिक विविधता को रेखांकित किया। साथ ही उन्होंने न केवल भारत, बल्कि व्यापक दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र के लिए भी मानकीकृत प्रोटोकॉल विकसित करने की महत्ता पर जोर दिया और यह भी कहा कि भविष्य केवल जैव विविधता में ही नहीं, बल्कि उन वैज्ञानिकों, वर्गीकीविदों (टैक्सोनॉमिस्ट) और आनुवंशिकीविदों (जेनेटिसिस्ट) में निहित है, जो इसका संरक्षण करते हैं।

अगली पीढ़ी के शोधकर्ताओं एवं वानिकी पेशेवरों को प्रकृति-आधारित उद्यमों, क्षमता निर्माण तथा प्रभावी ज्ञान हस्तांतरण के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने विज्ञान संचार में कहानी कहने की महत्ता पर भी जोर दिया और शोध को नीति तथा सामुदायिक कार्यों में परिवर्तित करने का समर्थन किया। डॉ. सिन्हा ने सभी राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकों, प्रधान अन्वेषकों, सह-अन्वेषकों, परियोजना कार्मिकों एवं CAMPA प्राधिकरण को उनके समर्पण और योगदान के लिए बधाई दी।

उद्घाटन सत्र के समापन पर, डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक-जी, एआईसीआरपी एवं एनपीएफजीआर कार्यशाला की संयोजक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात समूह छायाचित्र सत्र आयोजित किया गया, जिसके बाद जलपान का आयोजन हुआ।

### **तकनीकी सत्र –I**

सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. इलांगो, भा. व. से., मुख्य वन संरक्षक, मेरठ परिक्षेत्र, उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा की गई।

प्रथम तकनीकी सत्र की शुरुआत **AICRP-10: "डेवलपिंग सीड टेस्टिंग एंड सीड स्टोरेज प्रोटोकॉल्स ऑफ सिलेक्टेड फॉरेस्ट्री स्पीशीज़ फ्रॉम डाइवर्स फॉरेस्ट टाइप्स"** विषय पर प्रस्तुति से हुई, जिसे डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक-जी एवं राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, आईसीएफआरआई-एफआरआई द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनकी प्रस्तुति में बीजों के प्रबंधन हेतु अपनाई गई वैज्ञानिक पद्धतियों को रेखांकित किया गया, जिनका उद्देश्य विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों से प्राप्त वन बीजों की जीवक्षम क्षमता (viability) एवं दीर्घायु (longevity) को बढ़ाना है। उन्होंने सभा को विकसित प्रसार सामग्रियों (100 से अधिक प्रजातियों के पुस्तिकाएँ, फ्लायर, तकनीकी पुस्तिका

आदि) तथा गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन एवं नर्सरी तकनीकों पर आयोजित 17 क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के बारे में भी अवगत कराया, जिनका लाभ राज्य वन विभागों, नर्सरी संचालकों, स्वयं सहायता समूहों, विद्यार्थियों आदि को प्राप्त हुआ।

इसके बाद **AICRP-22: “प्रिपरेशन ऑफ फॉरेस्ट सॉइल हेल्थ कार्ड्स अंडर डिफरेंट फॉरेस्ट वेजिटेशन इन ऑल द फॉरेस्ट डिविज़न्स ऑफ़ इंडिया** “विषय पर सत्र आयोजित किया गया, जिसका नेतृत्व डॉ. वी.पी. पंवार, वैज्ञानिक-एफ एवं राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई ने किया। उन्होंने भारत के सभी वन प्रभागों में विभिन्न वनस्पतियों के अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने की प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने “स्वस्थ धरा, खेत हरा” के महत्व और इस संदर्भ में वन मृदा स्वास्थ्य कार्डों की भूमिका पर विशेष बल दिया। साथ ही उन्होंने मृदा उर्वरता प्रबंधन में आने वाली बाधाओं पर भी चर्चा की। इस परियोजना के अंतर्गत 5 लाख से अधिक मृदा नमूनों का संकलन किया गया। उन्होंने परियोजना के परिणाम प्राप्त करने के लिए अपनाई गई समस्त कार्यप्रणालियों, जैसे फील्ड डेटा शीट, जीपीएस उपकरण आदि, पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। इस परियोजना में 28 राज्यों से कुल 44,000 मृदा नमूने एकत्र किए गए।

## तकनीकी सत्र – II

यह सत्र डॉ. बसंत राज, भा.से.व., अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, पंजाब की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र की शुरुआत **AICRP-16: “बायोप्रॉस्पेक्टिंग फॉर इंडस्ट्रियल यूटिलाइजेशन ऑफ लेसर नोन फॉरेस्ट प्लांट्स”** विषय पर प्रस्तुति से हुई, जिसे डॉ. वी.के. वर्शेय, वैज्ञानिक-जी एवं राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में अनुसंधान का मुख्य केंद्र अल्प-उपयोगित वनस्पतियों के औद्योगिक संभावनाओं की खोज था, विशेष रूप से औषधि, प्रसाधन, सुगंध, एवं अन्य जैव-आधारित उद्योगों के क्षेत्रों में। कुल 50 लेसर नोन फॉरेस्ट प्लांट्स (LKFPs) की पहचान कर उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रलेखित किया गया। इन प्रजातियों का जनसंख्या-आधारित मानचित्रण किया गया तथा नमूनों का रासायनिक विश्लेषण कर उनमें पाए जाने वाले जैवसक्रिय यौगिकों एवं पादप-रसायनों (फाइटोकेमिकल्स) की जाँच की गई, जिनमें आवश्यक तेल (Essential Oils), वसा तेल (Fatty Oils), रंग (Dyes), गोंद (Gums), रेज़िन (Resins), फ्लैवोनॉइड्स (Flavonoids), एल्कलॉइड्स (Alkaloids) एवं अन्य यौगिक सम्मिलित थे। ये यौगिक सुगंध, सौंदर्य एवं विभिन्न प्रकार के प्रसाधन निर्माण में महत्वपूर्ण उपयोग की क्षमता प्रदर्शित करते हैं। विशेष रूप से, इस परियोजना के अंतर्गत जैव-संधान से प्राप्त क्रियात्मक सक्रिय यौगिकों के लिए 10 पेटेंट आवेदनों को दायर किया गया, जिनमें से 1 पेटेंट स्वीकृत हुआ है। इस शोध के परिणामस्वरूप 18 शोध पत्र, 2 समीक्षात्मक लेख, 4

पुस्तक अध्याय एवं 5 लोकप्रिय लेख प्रकाशित हुए, जो कार्य की वैज्ञानिक गहनता एवं औद्योगिक प्रासंगिकता को दर्शाते हैं।

इसके पश्चात “राष्ट्रीय वन आनुवंशिक संसाधन कार्यक्रम (National Programme on Forest Genetic Resources)” पर विस्तृत प्रस्तुति डॉ. संतन बर्थवाल, वैज्ञानिक-जी एवं राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने भारतीय वनों में आनुवंशिक विविधता के संरक्षण हेतु अपनाई गई व्यापक रणनीतियों का विवरण दिया, जिसमें जीन बैंक की स्थापना एवं क्षेत्रीय स्तर पर कार्यान्वयन उपाय शामिल थे। एनएफ़जीआर (NFGR) के अंतर्गत प्रमुख गतिविधियाँ 750 वन आनुवंशिक संसाधनों (Forest Genetic Resources - FGRs) की खोज, प्रलेखन, लक्षण वर्णन (Characterization) एवं संरक्षण पर केंद्रित रहीं। इसमें जनसंख्या सर्वेक्षण, पुनर्जनन की स्थिति का आकलन, जनसंख्या संरचना का विश्लेषण एवं पारिस्थितिक वितरण का मानचित्रण शामिल था। संरक्षण प्रयासों के अंतर्गत एफ़जीआर के बीज एवं जर्मप्लाज़्म का संग्रहण और भंडारण किया गया, जिसमें बीज नमूने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR-NBPGR) के सीड बैंक में जमा किए गए। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम के तहत एफ़जीआर का जैव-रासायनिक एवं आणविक लक्षण वर्णन किया गया, साथ ही रोगों एवं कीट-पतंगों की रिपोर्टिंग भी की गई। प्रजाति-विशिष्ट नर्सरी प्रोटोकॉल पर अनुसंधान, फील्ड जीन बैंक की स्थापना एवं विभिन्न वानिकी वृक्ष प्रजातियों के साथ अबॉरेटम का संवर्धन किया गया, ताकि दीर्घकालिक इन-सीटू एवं एक्स-सीटू संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई में एक राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं संदर्भ केंद्र (National Seed Research and Referral Centre) भी स्थापित किया गया है।

**द्वितीय दिवस : 6 अगस्त 2025**

**तकनीकी सत्र – III**

यह सत्र डॉ. राजेश शर्मा, उप महानिदेशक (अनुसंधान), आईसीएफ़आरई की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यशाला के द्वितीय दिवस की शुरुआत **AICRP-14: “वनाग्नि अनुसंधान एवं ज्ञान प्रबंधन”** पर गहन सत्र से हुई, जिसका संचालन श्रीमती ऋचा मिश्रा, भा. व. से., प्रमुख – सिल्वीकल्चर एवं वानिकी प्रबंधन प्रभाग तथा राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई, देहरादून ने किया। उन्होंने एकीकृत वनाग्नि प्रबंधन रणनीतियों पर विस्तार से जानकारी दी, जिसमें प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों, अग्नि पारिस्थितिकी अध्ययनों और सामुदायिक स्तर पर अग्नि-तैयारी की भूमिका पर विशेष बल दिया गया। उन्होंने बताया कि पाइन-प्रधान

पारिस्थितिक तंत्रों में, विशेषकर प्री-मानसून और ग्रीष्मकालीन चरम मौसम के दौरान, उच्च तापमान और सूखी गिरी पत्तियों के कारण वनाग्नि की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। यद्यपि पारिस्थितिक तंत्र में प्राकृतिक पुनर्जनन की क्षमता होती है और आग के बाद प्रायः संतुलन पुनः स्थापित हो जाता है, किन्तु पारिस्थितिक थ्रेशहोल्ड स्तर का निर्धारण आवश्यक है। इस सीमा से आगे, अपूरणीय क्षति रोकने के लिए मानव हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है। अतः, प्रभावी वनाग्नि प्रबंधन हेतु अग्नि प्रणालियों (fire regimes) का वैज्ञानिक मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप के उपयुक्त समय का निर्धारण अनिवार्य है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के सहयोग से, नए वनाग्नि उपकरण, सुरक्षा उपकरण तथा सुरक्षात्मक परिधान विकसित करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। श्रीमती मिश्रा ने वनाग्नि के विषय में जन-जागरूकता और हितधारकों तक पहुँच बढ़ाने के उद्देश्य से विकसित प्रसार सामग्री पर भी चर्चा की, जिसमें पुस्तिकाएँ, पैम्फलेट तथा सोशल मीडिया अभियानों का समावेश है। इसके उपरांत, प्रो. इंदरदीप सिंह, विभाग-डिज़ाइन तथा विभाग-यांत्रिक एवं औद्योगिक अभियांत्रिकी, आईआईटी रुड़की ने भी वनाग्नि नियंत्रण हेतु हैंड-हेल्ड उपकरणों में किए गए नवाचार प्रस्तुत किए। इनमें शामिल थे:

- वनाग्नि स्मदर्निंग ब्रूम (झप्पा): एस्वेस्टस-मुक्त ग्लास फाइबर सुदृढित ब्रेडेड सिरेमिक रोप, जो अपनी उच्च लचीलापन, ताप-प्रतिरोधक क्षमता, उच्च तापमान सहनशीलता एवं विद्युत-अचालकता के लिए प्रसिद्ध है, का उपयोग झप्पा के निर्माण में किया गया। यह सामग्री अग्नि-प्रभावित क्षेत्रों में उत्कृष्ट इंसुलेटर का कार्य करती है।
- वनाग्नि रेक्स:
  - प्रकार: एरो-टाइप, नेल-टाइप, और पेग-टूथ टाइप।
  - निर्माण में उच्च-कार्बन स्टील, समायोज्य रॉड, और वी-स्प्रिंग क्लिप का उपयोग किया जाता है, जिससे फायर लाइन बनाने और कचरा (लिटर) हटाने की दक्षता बढ़ाई जाती है।
- फायर सिकल :सतही आग बुझाने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया यह उच्च-कार्बन स्टील (AISI 1080) से निर्मित ब्लेड के साथ बनाया गया है, जबकि हैंडल लकड़ी और एल्युमिनियम रिबेट्स से बनाए गए हैं, जिससे यह टिकाऊ और उपयोग में सुविधाजनक बनता है।

इसके पश्चात, सेंटर फॉर फायर, एक्सप्लोसिव एंड एनवायरनमेंटल सेफ्टी (CFEES, DRDO), नई दिल्ली की डॉ. अलीप्स श्रीवास्तव ने आग की घटनास्थलों या आपात स्थितियों में आने वाले खतरों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने स्ट्रक्चरल फायर प्रोटेक्टिव गियर्स के मानक घटकों के बारे में जानकारी दी, जिनमें शामिल हैं:

- कोट्स और ट्राउज़र्स
- हेलमेट्स और प्रोटेक्टिव हुड्स
- आंख और श्रवण सुरक्षा
- दस्ताने और बूट्स
- स्टेशन वर्क यूनिफॉर्म्स
- सेल्फ-कंटेन्ड ब्रीदिंग अप्परेटस (SCBA)
- पर्सनल अलर्ट सेफ्टी सिस्टम्स (PASS)

इन नवाचारों और सुरक्षा उपायों का उद्देश्य वन अग्नि प्रतिक्रिया दल की क्षमता को बढ़ाना है, साथ ही अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों की अधिकतम सुरक्षा सुनिश्चित करना और आग से निपटने की दक्षता में सुधार करना है।

समापन सत्र में, आगे की दिशा डॉ. राजेश शर्मा, डिप्टी डायरेक्टर जनरल (अनुसंधान), ICFRE द्वारा प्रस्तुत की गई, जिसमें भविष्य की दिशा एवं सहयोगात्मक अनुसंधान के लक्ष्यों का विवरण दिया गया। अंतिम टिप्पणी डॉ. रेनू सिंह, भा. व. से., निदेशक, आईसीएफआरई-एफआरआई द्वारा दी गई, जिसमें उन्होंने बेहतर भविष्य के लिए सतत अनुसंधान और सभी हितधारकों की सहभागिता की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यशाला का समापन डॉ. वी.के. वर्शेय, वैज्ञानिक-जी, आईसीएफआरई-एफआरआई द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

## राष्ट्रीय आउटरीच कार्यशाला की कुछ झलकियाँ



स्वागत संबोधन – डॉ. रेनू सिंह, भा. व. से., निदेशक, आईसीएफआरई-एफआरआई



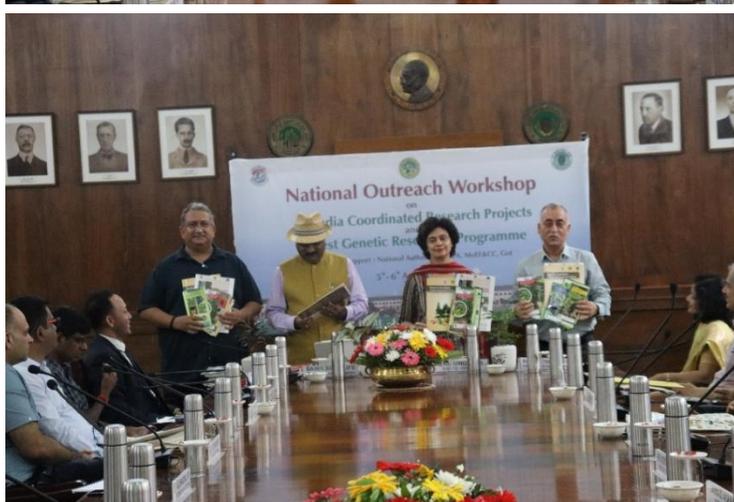
मुख्य अतिथि डॉसमीर सिन्हा ., भा. व. से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रधान वन बल प्रमुख, उत्तराखण्ड द्वारा उद्घाटन संबोधन



उद्घाटन सत्र के दौरान विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए



राष्ट्रीय कार्यशाला में उपस्थित जनसमूह



मुख्य अतिथि, निदेशक ICFRE-FRI, उप महानिदेशक (अनुसंधान) एवं राष्ट्रीय परियोजना समन्वयकों (NPCs) द्वारा उद्घाटन सत्र के दौरान AICRPs एवं NPFGR की विस्तार सामग्री का विमोचन



डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक-जी, समन्वयक AICRP एवं NPFGR कार्यशाला द्वारा धन्यवाद ज्ञापन



राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रतिभागियों का समूह छायाचित्र



AICRP-10 पर प्रस्तुति – डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक-जी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक



AICRP-22 पर प्रस्तुति – डॉ. वी.पी. पंवार, वैज्ञानिक-एफ, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक



AICRP-16 पर प्रस्तुति – डॉ. वी.के. वर्श्रेय, वैज्ञानिक-जी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक द्वारा प्रस्तुत



नेशनल प्रोग्राम ऑन एफजीआरएस पर प्रस्तुति – डॉ. संतान बर्थवाल, वैज्ञानिक-जी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक द्वारा प्रस्तुत



एआईसीआरपी-14 पर प्रस्तुति – श्रीमती ऋचा मिश्रा, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक एवं अन्य सहयोगियों द्वारा प्रस्तुत



आगे की दिशा पर विचार – डॉ. राजेश शर्मा, उप महानिदेशक (अनुसंधान), आईसीएफ़आरआई



समापन टिप्पणी – डॉ. रेनू सिंह, भा.व.से., निदेशक, आईसीएफ़आरआई-एफ़आरआई



धन्यवाद ज्ञापन – डॉ. वी.के. वर्श्रेय, वैज्ञानिक-‘जी’, आईसीएफ़आरई-एफ़आरआई